

The Hindu- 16- October-2021

## Blue alert sounded for Idukki dam

A CORRESPONDENT

IDUKKI

The Kerala State Electricity Board authorities issued an official alert on Friday when water level in the Idukki reservoir crossed the blue alert mark.

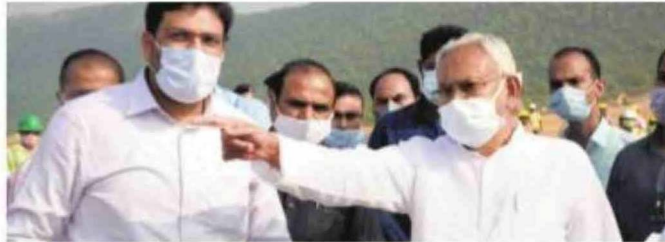
As per the new rule curve announced by the Central Water Commission (CWC) which is valid till October 20, the blue alert must be issued when the water level touches 2,390.86 ft. The water level in the reservoir stood at 2,390.98 ft at 5 p.m. on Friday, which is 86.5% of the total storage level. The water level on the same day last year was 2,392.52 ft (87.93 %).

A KSEB official said the rain in the catchment area had subsided and the inflow through the Periyar also had gone down. The water level reached the blue alert mark at 9 a.m. on the day. The chances of opening the dam shutters are remote as there is a difference of 6 ft to the orange alert level (2,396.86 ft) and 7 ft to the red alert level (2,397.86 ft). The full reserve level of the dam is 2,403.50 ft, he said. The official said the blue alert may be withdrawn when the level is revised on October 20.

The Morning Standard- 16 October 2021

### Four Bihar cities to get drinking water from Ganga

Facing severe shortage of drinking water, city dwellers in Bihar's four major towns – Rajgir, Gaya, Bodh Gaya and Nawada – will soon have access to safe drinking water. Chief Minister Nitish Kumar recently reviewed the work related to Ganga Water Lift Project at Gaya and Nawada under which the water from the holy river would be lifted and supplied to the residents of these cities. Secretary of Water Resources Department, Sanjeev Hans said the project would cover 149 km through pipelines from the Ganges in Begusarai as part of the Jal Jeevan Hariyali Abhiyan. "So far, work of pipeline laying has been completed in 118.28 km from Hathidah to Manpur Avgilla," Hans said.



Rajasthan Patrika- 16- October-2021

**क्लाइमेट चेंज: छत्तीसगढ़ समेत देश में बन रही 'एक्सट्रीम वेदर कंडीशन'**

# घट रहे बारिश के दिन, जुलाई-अगस्त से ज्यादा इस बार सितम्बर में बरसा पानी



एक्सक्लूसिव

**मानसून की विदाई-**  
छत्तीसगढ़ में 100%  
का था अनुमान, 97%  
हुई बारिश

पत्रिका न्यूज नेटवर्क  
patrika.com

रायपुर. प्रदेश में मानसून की विदाई हो चुकी है। मगर, इस बार का मानसून अपने पीछे कई सवाल छोड़ गया है जिसने मौसम विज्ञानियों से लेकर कृषि विशेषज्ञों, किसानों और यहां तक की सरकार को भी हैरत में डाल दिया है। इसकी वजह है क्लाइमेट चेंज। जी हां, इस साल जुलाई में औसत से 44 मिमी कम जबकि अगस्त में 143 मिमी कम बारिश हुई। उधर, सितंबर में 101 मिमी अधिक बारिश हुई। इसके चलते ही जुलाई और अगस्त में हुई कम बारिश की भरपाई हो पाई। वरना इस बार तो भारी मात्रा में फसलों का खराब होना तय था।

मौसम विभाग ने 100 प्रतिशत बारिश का पूर्वानुमान जारी किया था, इससे सिर्फ 3 प्रतिशत कम बारिश



## इस वर्ष की बारिश

- 56.04 दिन रही बारिश के दिन की संख्या

- 3 प्रतिशत कम हुई बारिश (1142 मिमी होनी चाहिए थी, मगर हुई है 1108 मिमी)

## जलवायु परिवर्तन का सबसे अधिक खतरा इन राज्यों में

छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, ओडिशा, अरुणाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल।

## आंकड़े बोलते हैं....

माह	बीते 10 वर्षों में औसत बारिश	वर्ष 2021 में
जून	193.5 मिमी	244.4 मिमी
जुलाई	375.5 मिमी	331.6 मिमी
अगस्त	364.2 मिमी	221.5 मिमी
सितंबर	208.9 मिमी	310.2 मिमी

(नोट- मौसम विज्ञान विभाग रायपुर द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक)

रिपोर्ट हुई। 'पत्रिका' को मिली जानकारी के मुताबिक मौसम विज्ञानी इस बात को रिपोर्ट कर रहे हैं कि अब एक्सट्रीम वेदर कंडीशन यानी भयावह मौसम परिस्थितियां

बन रही हैं। यानी जहां बारिश हो रही है तो लगातार और भयावह हो रही है, बाढ़ के हालात बन रहे हैं। जहां टंड पड़ रही है वहां बहुत टंड पड़ रही है, जहां बर्फबारी हो रही है वहां अधिक

हो रही हैं। अगर, अगले साल भी यही स्थिति रही तो मौसम विज्ञानी मान रहे हैं कि जल प्रबंधन पर खासा फोकस करना होगा। उधर, कम बारिश, अधिक गर्मी और कम टंड की वजह से जन-जीवन पर असर पड़ेगा।

2000 के बाद से लगातार बढ़ रहा तापमान- मौसम विभाग के मुताबिक छत्तीसगढ़ में साल 2000 के बाद से तापमान में बदलाव नोटिस किया जा रहा है। खासकर गर्मी में। हर साल गर्मी में औसतन 0.5 डिग्री तापमान में वृद्धि दर्ज की जा रही है।

## एक्सपर्ट व्यू

इस साल पूर्वानुमान के करीब-करीब बारिश हुई। मगर, बरसात के दिनों की संख्या घटी है। यह अच्छे संकेत नहीं है। न सिर्फ छत्तीसगढ़ बल्कि अलग-अलग क्षेत्रों में एक्सट्रीम वेदर कंडीशन भी देखने को मिल रही हैं। ये ग्लोबल वॉर्मिंग का ही प्रभाव है। इसका असर खेती, स्वास्थ्य, सब पर पड़ रहा है।

**एचपी चंद्रा**, वरिष्ठ मौसम विज्ञानी, लालपुर मौसम विज्ञान केंद्र